



उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद
द्वारा

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
कुमारगंज, अयोध्या
का भ्रमण करने और समीक्षा के उपरान्त की
कार्यवृत्त

अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट



आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज का मुख्य द्वार

अनुसंधान प्रगति रिपोर्ट

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के दौरे की कार्यवृत्त 22-23 अगस्त 2025 को, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद [उपकार], लखनऊ के निम्नलिखित सदस्यों ने आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या का दौरा किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर और संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्र [के.वी.के] में पिछले तीन वर्षों [2022-2025] के अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार गतिविधियों की समीक्षा की गई।

1.डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक

2.डॉ. राजर्षि कुमार गौड़, उप महानिदेशक [अनु. परि. प्र. और सम.]

3.डॉ. परमेश्वर सिंह, उप महानिदेशक [कृ. शि. और प्रौ. ह.]

1. वित्त पोषित परियोजनाओं की संख्या: 41				
	All India Co-Ordinated Research Projects (75% ICAR share and 25% State share)	U.P.C.A.R.	Research Projects Financed by RKVY/SADP/Mandi Parishad	Research Projects Financed by other National/State Agencies
	18	9	6	8
परियोजना की कुल लागत (रुपये में): 8104.89 Lakhs				
	All India Co-Ordinated Research Projects (75% ICAR share and 25% State share)	U.P.C.A.R.	Research Projects Financed by RKVY/SADP/Mandi Parishad	Research Projects Financed by other National/State Agencies
	55.20 1220.73	127.18	6547.31	154.47
2. प्रमुख अनुसंधान उपलब्धियाँ				
<ul style="list-style-type: none"> आलू पर एआईसीआरपी एएनडीयूएटी अयोध्या केंद्र को फसल सुधार, फसल उत्पादन और फसल सुरक्षा के विषयों में 2022-23 से 2024-25 तक कुल 57 प्रायोगिक परीक्षण आवंटित किए गए थे, और केंद्र ने 100% प्रयोगों को सफलतापूर्वक संचालित किया है। अयोध्या केंद्र में निम्नलिखित जीनोटाइप का मूल्यांकन किया गया और किस्मों के रूप में जारी किया गया: शीघ्र रोपण और ताप सहनशीलता के लिए कुफरी किरण, प्रसंस्करण और खाने के उद्देश्य के लिए कुफरी संगम, प्रसंस्करण के लिए कुफरी फ्रायोम, कुफरी चिप्सोना 4 और कुफरी चिप्सोना-5, एंटीऑक्सीडेंट की प्रचुर मात्रा वाली कुफरी जामुनिया और कुफरी नीलकंठ, खाने के उद्देश्य के लिए कुफरी भास्कर, कुफरी लोहित और कुफरी सुख्यति का भी इस केंद्र में परीक्षण किया गया। 42वीं एआईसीआरपी आलू समूह बैठक के दौरान, 4 प्रविष्टियाँ जारी की गईं। आलू की फसल में एफिड आबादी की निगरानी से पता चला है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में आलू 				

उगाने के मौसम में जनवरी के पहले सप्ताह (लगभग 7 जनवरी) के दौरान एफिड आबादी आर्थिक सीमा स्तर (20 एफिड/100 संयुक्त पत्तियां) को पार कर जाती है। यह जानकारी आलू की फसल में वायरस फैलाने वाले इन एफिड्स के प्रबंधन के लिए कीटनाशकों के किफायती और आवश्यकता-आधारित उपयोग में सहायक है।

- *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* आधारित कृषि सिल्विकल्चर प्रणाली के तहत धान की किस्म सरजू-52 ने खरीफ के दौरान अधिकतम अनाज उपज दिखाई, जबकि सरसों की किस्म आरएच 725 ने दोनों प्रणालियों में रबी के दौरान बेहतर प्रदर्शन किया।
- उड़द (हरा चना) किस्म नरेंद्र उर्द-1 ने दोनों *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* कृषि वानिकी प्रणालियों के तहत उल्लेखनीय रूप से बेहतर अनाज उपज दर्ज की।
- *Casuarina equisetifolia* और *D. sissoo* आधारित कृषि-सिल्विकल्चर प्रणाली के अंतर्गत जैविक उर्वरकों के प्रयोग में, दोनों प्रणालियों के अंतर्गत एफवाईएम 10 प्रति हेक्टेयर के प्रयोग से धान (किस्म DBW 52) और गेहूं (किस्म DBW 187) की अनाज उपज अधिकतम पाई गई।
- बागवानी के लिए राजपत्र और अधिसूचना और किस्मों का विमोचन, अर्थात् नरेंद्र आंवला-25, नरेंद्र आंवला-26, नरेंद्र बेल-8, नरेंद्र बेल-10, नरेंद्र बेल-11, नरेंद्र बेल-17, नरेंद्र बेर-2।
- आशाजनक जीनोटाइप: आंवला: नरेंद्र आंवला-27, नरेंद्र आंवला-29, नरेंद्र आंवला-31, नरेंद्र आंवला-32, नरेंद्र आंवला-33 और नरेंद्र आंवला-34
- बाल: एनडी/एएच-9, एनडी/एएच-11, एनडी/एएच-12, एनडी/एएच-16, एनडी/एएच-21, एनडी/एएच-22, एनडी/एएच-25, एनडी/एएच-26, एनडी/एएच-27 और एनबी-19, एनबी-21, एनबी-22, एनबी-23।
- बेर: नरेंद्र बेर चयन-9, नरेंद्र बेर चयन-10, नरेंद्र बेर चयन-11, नरेंद्र बेर चयन-12, नरेंद्र बेर चयन-13, नरेंद्र बेर चयन-14, नरेंद्र बेर चयन-15, नरेंद्र बेर चयन-16।
- जामुन: नरेंद्र जामुन-6, नरेंद्र जामुन-7, नरेंद्र जामुन-8, नरेंद्र जामुन-9
- दो नई किस्में विकसित: नरेंद्र हल्दी-4 (एनडीएच-11) आईसी-0645851 और नरेंद्र हल्दी-5 (एनडीएच-98) आईसी-564498
- लौकी की नई किस्में जारी: नरेंद्र कामना (एनडीबीजी-16) और नरेंद्र सीता (एनडीबीजीएच-14-10), बैंगन (लंबा): नरेंद्र सुयोग (एनडीबी सफेद-1), हरी सरसों: नरेंद्र सरसों साग-1।
- एआईसीआरपी में बहु-स्थानीय परीक्षण के लिए 01 मक्का ओपीवी (एनडीएमसी 02) का योगदान दिया गया है और एआईसीआरपी एवं राज्य में बहु-स्थानीय परीक्षण के लिए एक और मक्का ओपीवी तैयार है।
- मक्का-गेहूं प्रणाली में खरपतवार प्रबंधन विकल्पों के लिए अनुशंसा: खरीफ मक्का में 25-30

दिनों पर एट्राजीन 50% WP @ 500 ग्राम/हेक्टेयर / पाइरोक्सासल्फोन @ 127 ग्राम/हेक्टेयर (पीई) एफबी टेम्बोट्रियोन 34.4% एससी @ 120 ग्राम/हेक्टेयर या मेसोट्रियोन + एट्राजीन @ 300 ग्राम/हेक्टेयर (पीओई) का प्रयोग।

- रोग विज्ञान: चावल के शीथ ब्लाइट के प्रबंधन के लिए कवकनाशी टेबुकोनाज़ोल 25.9% ईसी @ 1.5 मिली/ली की अनुशंसा की जाती है। (58वीं वार्षिक चावल समूह बैठक, 2023 की मसौदा कार्यवाही, पृष्ठ 68)। कीट विज्ञान: वनस्पति कीटनाशक नीमजल 1% ईसी @ 2 मिली/ली (25-30 दिन) + नीम तेल @ 10 मिली/ली (45-50 दिन) के साथ ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी @ 0.48 मिली/ली (60-65 दिन) का संयोजन चावल के तना छेदक और पत्ती मोड़क के प्रबंधन के लिए बहुत प्रभावी पाया गया। (58वीं वार्षिक चावल समूह बैठक की मसौदा कार्यवाही, 2023, पृ. 69), कृषि विज्ञान: 4% एन के बजाय 16% एन के साथ नैनो यूरिया का उपयोग किया जाना है जिससे चावल की उपज अधिक पाई गई।
- नई किस्मों का विकास: Brahmi (*Bacopa monneri*)-DBM-4; Opium Poppy(*Papaver somnifera*)-NBMHT-4; Turmeric (*Curcuma longa*)-Narendra Haldi -5; Basil(*Ocimum basilicum*)-MOB-10.
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति; चेक बेसिन (10x10 मीटर) के माध्यम से तालाब के पानी के गायब होने के 1-4 दिनों के बाद प्रत्येक सिंचाई में 7 सेमी पानी देने से चावल की उच्च उपज क्रमशः शीर्ष, मध्य और अंतिम सिरे पर 51.6, 48.4 और 48.0 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दर्ज की गई, जो किसानों की पद्धति (बाढ़/खेत से खेत सिंचाई द्वारा प्रत्येक सिंचाई में 10-12 सेमी पानी) की तुलना में लगभग 24.4-27.0% अधिक थी और इससे लगभग 35.00% सिंचाई जल की बचत भी हुई। बेहतर जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया।
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया।
- उन्नत जल प्रबंधन पद्धति में किसानों की पद्धति की तुलना में WEE का उच्च मान 60.9 से 67.4 किग्रा/हेक्टेयर/मिमी की सीमा में भी देखा गया। चने और सरसों की अंतर-फसल (4:1) सर्वोत्तम पाई गई है क्योंकि इससे 47.8 क्विंटल/हेक्टेयर की उच्चतम समतुल्य गेहूँ उपज प्राप्त हुई। इसके बाद मसूर और सरसों की अंतर-फसल (4:1) और शुद्ध चने की अंतर-फसल का स्थान आता है, जिसमें समतुल्य गेहूँ उपज क्रमशः 44.9 और 43.0 क्विंटल/हेक्टेयर थी। सरसों और चने की अंतर-फसल
- सरसों के साथ चने की अंतरफसल (4:1) सर्वोत्तम पाई गई है क्योंकि इसने 47.8 क्विंटल/हेक्टेयर की उच्चतम समतुल्य गेहूँ उपज दी, इसके बाद सरसों के साथ मसूर की अंतरफसल (4:1) और चने की शुद्ध फसल है जिसमें समतुल्य गेहूँ उपज क्रमशः 44.9 और

	<p>43.0 क्विंटल/हेक्टेयर थी। चने के साथ सरसों की अंतरफसल ने 2.69 के उच्चतम लाभ लागत अनुपात के साथ प्रति हेक्टेयर 74075.00 रुपये का अधिकतम शुद्ध लाभ दर्ज किया।</p> <ul style="list-style-type: none"> • पारंपरिक किसान प्रथा, जिसमें प्रति वर्ष 1,16,224.00 रुपये प्रति हेक्टेयर का शुद्ध लाभ दर्ज किया गया था, की तुलना में मत्स्य पालन वाली एकीकृत कृषि प्रणाली ने प्रति वर्ष 2,23,648.00 रुपये प्रति हेक्टेयर का उच्चतम शुद्ध लाभ दर्ज किया। • चावल के भूसे का उपयोग करके दो श्रेणियों के उत्पाद विकसित किए गए: ब्रेडिंग विधि द्वारा हैंडबैग, फाइल कवर, स्टोरेज बॉक्स, डोर मैट और इसे लुगदी में परिवर्तित करके प्लांट ग्रोवर, शिक्षण सहायक सामग्री, कोस्टर, फ्रिज मैग्नेट। • शारीरिक मार्करों पर शेष परीक्षण किए गए जीनोटाइप की तुलना में DBW 187, DBW22, PBW 373 और UN 1 सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले गेहूं जीनोटाइप पाए गए। • उत्तर प्रदेश के चयनित जिलों (अयोध्या, लखनऊ, गोरखपुर और प्रयागराज) में शहरी और ग्रामीण दोनों आवासों से 16 ऑर्डर और 49 परिवारों से संबंधित 128 पक्षी प्रजातियां दर्ज की गईं। • ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार अपने शहरी समकक्षों की तुलना में अधिक संख्या में प्रजातियां पाई गईं। लखनऊ, 54 (शहर) बनाम 116 (ग्रामीण); प्रयागराज, 47 (शहर) बनाम 109 (ग्रामीण); गोरखपुर 59 (शहर) बनाम 101 (ग्रामीण); और अयोध्या 60 (शहर) बनाम 104 (ग्रामीण)। • बस्तियों के करीब स्थित आर्द्रभूमि, जैसे पार्वती अर्गा पक्षी अभयारण्य और पिपरा ताल, पर अपशिष्ट डंपिंग, जल दोहन और प्रदूषण जैसे प्रत्यक्ष मानवीय प्रभाव पड़ने की अधिक संभावना है। इसी प्रकार, राजमार्गों के निकट आर्द्रभूमि—विक्षोभ की तीव्रता को प्रभावित करती है। संरक्षित वन के भीतर स्थित सुहेलवा वन्यजीव अभयारण्य जैसे दूरस्थ स्थल, अलगाव और सापेक्ष सुरक्षा से लाभान्वित होते हैं। • "न्यूनतम चिंता" श्रेणी (90%), "संकटग्रस्त" (3%) और "संवेदनशील" (2%)। • अध्ययन अवधि के दौरान सरयू नदी में 42 और गोमती नदी में 46 मत्स्य प्रजातियाँ दर्ज की गईं। • विश्वविद्यालय में पहली बार मखाने की खेती शुरू हुई है। यह कदम राज्य की कृषि क्रांति में एक नया अध्याय लिखेगा और किसानों के लिए एक बड़ा अवसर होगा।
3.	नया अवलोकन
	<ul style="list-style-type: none"> • आलू की फसल में सक्रिय कीटों के रूप में तीन एफिड प्रजातियों, अर्थात् <i>Myzus persicae</i>, <i>Aphis spiraecola</i>, और <i>Rhopalosiphum rufiabdominalis</i> की पहचान की गई और उनकी व्यापकता की पुष्टि की गई, जो आलू की फसल में विषाणु जनित रोग फैला सकते हैं। • उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी क्षेत्र में आलू की फसल के नमूनों में आलू विषाणु X (PVX) और आलू विषाणु Y (PVY) की पहचान की गई है।

	<ul style="list-style-type: none"> • शीशम के वृक्ष सुधार परियोजना के अंतर्गत, PS-52 क्लोन में वृक्ष की ऊँचाई सबसे अधिक थी, उसके बाद L-5, L-1 और PS-38 और वृक्ष की ऊँचाई सबसे अधिक L-5 थी, जबकि dbh PS-52 में सबसे अधिक और उसके बाद L-5 में सबसे अधिक दर्ज किया गया। • वन उत्पादकता संस्थान, रांची, उपकेंद्र हाजीपुर, बिहार से एकत्रित <i>Melia dubia</i> जर्मप्लाज्म पर एक नए प्रयोग में, <i>Melia dubia</i> के वृक्ष की ऊँचाई और dbh MDP-4 में और उसके बाद MDP-3 में सबसे अधिक दर्ज किया गया। • Aloe vera (<i>Aloe barbadensis</i>) और Sataver (<i>Asparagus racemosus</i>) के जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन। • अफीम पोस्त (<i>Papaver somniferum</i>) की उच्च उपज और गुणवत्ता के लिए आशाजनक प्रजातियों का एमएलटी मूल्यांकन: • लेमनग्रास (<i>Cymbopogon flexuosus</i> var. <i>flexuosus</i>), Aloe (<i>Aloe barbadensis</i>) (IVT), Brahmi (<i>Bacopa monnuri</i>) MLT, Mandukaparni (<i>Centella asiatica</i>) की एमएलटी में आशाजनक प्रजातियों का मूल्यांकन। • उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से देशी सुगंधित लघु दाना (एएसजी) चावल जर्मप्लाज्म का संग्रह, सर्वेक्षण के दौरान एकत्र किए गए 45 सुगंधित लघु दाना (एएसजी) जर्मप्लाज्म की खेती, एएसजी जर्मप्लाज्म का डेटा रिकॉर्डिंग और मूल्यांकन, स्थानीय पारंपरिक एएसजी जर्मप्लाज्म का शुद्धिकरण।
4.	नया नवाचार
	<ul style="list-style-type: none"> • आलू पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी), अयोध्या केंद्र, आलू पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी) की परियोजना समन्वय इकाई के सहयोग से, आस-पास के क्षेत्र के आलू किसानों के लिए समाचार पत्रों के माध्यम से INDO-BRIGHTCAST मॉडल का उपयोग करते हुए आलू के पछेती झुलसा रोग की चेतावनी और उसके प्रबंधन संबंधी परामर्श जारी करता है। • <i>Casuarina equisetifolia</i> और <i>Dalbergia sissoo</i> आधारित कृषि-सिल्वी प्रणालियों के अंतर्गत धान और गेहूँ की बेहतर वृद्धि और उपज प्राप्त करने के लिए, एनपीके की 50% अनुशंसित खुराक के साथ 10 टन एफवाईएम प्रति हेक्टेयर के प्रयोग को मानकीकृत किया गया है। • बायोएथेनॉल उत्पादन के लिए उपयुक्त लाइन की पहचान हेतु मक्का जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन, गतिविधि: उच्च बायोएथेनॉल उत्पादन के लिए उपयुक्त लाइन की पहचान हेतु उपलब्ध जर्मप्लाज्म का मूल्यांकन किया जाएगा और इसमें एडीएफ, एनडीएफ, हेमीसेल्यूलोज, लिग्निन सामग्री, उच्च भूसा उपज जैसे लक्षण देखे जाएँगे। • एलोवेरा की नई आशाजनक प्रविष्टियाँ प्रस्तुत की गई - Aloe vera- Leaf spot resistant/ tolerant- IC- 283655, IC- 283610 and IC- 310609; Soft rot resistant/ tolerant -

	<p>IC- 285626; High gel content – IC- 310596 and IC-285629; Kalmegh- Root rot resistant/ tolerant- IC- 471994; Satavar –Root rot resistant – NDAS-101 and NDAS-102; Opium poppy - Downy mildew resistant/ tolerant-ND-21, ND-4-1 and ND-16</p> <ul style="list-style-type: none"> • एरोमेटिक आयल डिस्टिलेशन इकाई की स्थापना, औषधीय एवं एरोमेटिक नर्सरी की स्थापना, हर्बल उद्यान का विकास
9.	पेटेंट एवं इसके व्यावसायीकरण की स्थिति
	<ul style="list-style-type: none"> • बिना किसी कृत्रिम परिरक्षक के गुडहल आधारित आरटीएस का विकास। (आवेदन: 202411073790)। स्थिति: प्रकाशित।
10.	उत्पाद/प्रक्रिया विकास एवं व्यावसायीकरण की स्थिति
	<ul style="list-style-type: none"> • बेल में उच्च घनत्व रोपण: बेल में, 8.0 x 5.0 मीटर पेड़ों के अंतराल के साथ 25% छंटाई से नियंत्रित और 50% छंटाई की तुलना में उच्चतम उपज (45.97 किग्रा/पेड़) प्राप्त होती है। इसलिए, उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक खेती के लिए 8.0x5.0 मीटर पेड़ों के अंतराल के साथ 25% छंटाई की सिफारिश की जाती है। • आंवला, किस्म NA-7 गुजरात और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित है। • बेल, किस्म NB-9 और NB-5 जो उत्तर प्रदेश में लोकप्रिय हैं, हरियाणा, गुजरात और राजस्थान राज्यों में व्यावसायिक रोपण के लिए अनुशंसित हैं। • बेर, नरेंद्र बेर सेल-1 उत्तर प्रदेश के लिए और गोमा कीर्ति गुजरात क्षेत्रों के लिए अनुशंसित है। • नई प्रौद्योगिकियां विकसित की गईं: एलोवेरा की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, ईसबगोल की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, तुलसी की खेती के लिए उत्पादन तकनीक, अफीम पोस्त के प्रमुख रोगों (बैक्टीरियल ब्लाइट/ रूट रॉट और डाउनी फफूंद) के लिए आईडीएम तकनीक, सहयोगी केंद्रों (एएनडीयूएटी, अयोध्या, बीएयू, इस्लामपुर, जेएनकेवीवी, जबलपुर, आरपीसीएयू पूसा) द्वारा मीठी तुलसी के पर्णिय (अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट) और मृदा जनित रोगों (मैक्रोफोमिनाफेजोलिना) के प्रबंधन के लिए विकसित तकनीक को सिफारिश के लिए अनुमोदित किया गया। रोपण के समय ट्राइकोडर्मा हरजियानम के टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन के साथ-साथ 2% स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस से समृद्ध एफवाईएम @10 टन/हेक्टेयर के साथ मिट्टी का उपचार करें। सहयोगी केंद्र एमपीयूएटी, उदयपुर, आरवीएसकेवीवी, सीओएच मंदसौर, एनडीयूएटी, अयोध्या द्वारा अफीम पोस्त की प्रमुख बीमारियों (डाउनी फफूंदी और बैक्टीरियल ब्लाइट/रूट रॉट) के खिलाफ सिफारिश के लिए अनुमोदित किया गया था। बुवाई से 4-5 दिन पहले टी. हरजियानम + स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस @ 2% से समृद्ध एफवाईएम (500 ग्राम/एम2) का कुंड मिट्टी में प्रयोग + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन सल्फेट @ 0.03% (300 पीपीएम) और मेटालैक्सिल @ 2.5 ग्राम/किग्रा के साथ बीज उपचार, इसके बाद रोग के लक्षण दिखाई

	<p>देने पर टी. हरजियानम + स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस @ 0.5% का छिड़काव करें, फिर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन सल्फेट @ 0.03% (300 पीपीएम) और मेटालैक्सिल @ 0.25% के साथ 15 दिनों के अंतराल पर दूसरा और तीसरा छिड़काव डाउनी फफूंदी और कॉलर रॉट के प्रबंधन में न्यूनतम घटना के साथ प्रभावी पाया गया 16.42% और 8.88%। इस उपचार से उच्च मांस लेटेक्स उपज (27.8 किग्रा/हेक्टेयर), बीज उपज (848.45 किग्रा/हेक्टेयर) और कैप्सूल भूसी उपज के साथ उच्च मॉर्फिन सामग्री (11.67%) और उच्चतम बी:सी अनुपात (1:8.68) भी प्राप्त हुई।</p> <ul style="list-style-type: none"> • एलोवेरा के पर्ण रोगों (अल्टरनेरिया और कोलेटोट्राइकम लीफ स्पॉट) और मृदु सड़न के प्रबंधन के लिए विकसित तकनीक को सिफारिश के लिए मंजूरी दी गई है। रोपण और रोग के लक्षणों की शुरुआत के समय 2% की दर से ट्राइकोडर्मा हार्जियानम के साथ स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन के साथ गोबर की खाद (1.0 किग्रा/एम2) का मिट्टी में प्रयोग। टैल्क-आधारित फॉर्मूलेशन पर 2% पी. फ्लोरोसेंस और 0.3% नीम तेल के तीन छिड़काव से रोग के पर्ण धब्बे का प्रकोप 76 प्रतिशत और मृदु सड़न 43 प्रतिशत कम हो गया। इससे उपज भी 23 प्रतिशत और लागत भी बढ़ गई। लाभ अनुपात 5.5 प्राप्त हुआ। • अफीम पोस्त के कोमल फफूंदी और पत्ती धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए 30, 45, 65 और 75 दिन पर ट्राइकोडर्मा विराइड से समृद्ध 2.0% (50 किग्रा/हेक्टेयर) वर्मीकम्पोस्ट (2.5 टन/हेक्टेयर) का नाली में प्रयोग + 5.0% (50 मिली/ली) “बीजामृत” से बीज उपचार और उसके बाद 0.2% (2 मिली/ली) नीम तेल का छिड़काव करने की सिफारिश की गई थी। • बुवाई से 4-5 दिन पहले टी. हरजियानम से समृद्ध 2.0% (20 किग्रा/हेक्टेयर) गोबर की खाद (5 टन/हेक्टेयर) का नाली में प्रयोग + 5.0% (50 मिली/ली) “बीजा अमृत” से बीज उपचार और किसी भी रोग के लक्षण दिखाई देने पर, 15 दिनों के अंतराल पर 10.0% (100 मिली/ली) नीम पत्ती अर्क के साथ तीन पर्णिय छिड़काव ईसबगोल के कोमल फफूंदी और विल्ट के प्रबंधन के लिए अनुशंसित। • जिबरेलिक एसिड (GA3) @0.2% (2 मिली/लीटर) और ट्रायकोन्टानॉल (TRIA) @0.2% (2 मिली/लीटर) का पर्णिय छिड़काव, अफीम पोस्त की अधिकतम बीज उपज (1078.70 किग्रा/हेक्टेयर) और लेटेक्स उपज (31.33 किग्रा/हेक्टेयर) के साथ उच्च B:C अनुपात (2.91) के साथ, नियंत्रण के विरुद्ध प्रभावी पाया गया। • पोर्टेबल सोलर पैनल क्लीनर विकसित किया गया।
11.	नवप्रवर्तन केंद्र/इन्क्यूबेशन केंद्र/स्टार्ट-अप/उद्यमिता
	<ul style="list-style-type: none"> • सुगंधित पौधों के तेल आसवन इकाई की स्थापना की। सुगंधित पौधों के उत्पादकों को कस्टम किराये के आधार पर तेल आसवन की सुविधा प्रदान की।

उपकार टीम अवलोकन:

1. अधिकांश शोध कार्यों की प्रगति बहुत धीमी है। प्रधान अन्वेषकों को वित्त पोषण एजेंसियों को उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में समस्या आ रही है, जिससे वित्त पोषण एजेंसियों से धनराशि अवमुक्त होने में विलम्ब हो रहा है।
2. वर्तमान में चल रही शोध परियोजनाओं में उद्देश्य और परिणाम से विचलन दिखाई दे रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधान अन्वेषक अपने शोध पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं।
3. वित्त पोषण एजेंसियों को प्रस्तुत किए गए शोध प्रस्तावों की गुणवत्ता अच्छी नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय की परियोजना मूल्यांकन समिति शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय सावधानी नहीं बरत रही है।
4. समिति द्वारा वित्त कार्यालय से संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन विभाग से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।
5. परियोजना के अंतर्गत यंग प्रोफेशनल [YP-I/YP-II] की नियुक्ति केवल छह महीने के लिए होती है, न कि परियोजना की अवधि तक।
6. यद्यपि शोध वैज्ञानिक अपने उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट दाखिल कर रहे हैं, लेकिन वे उन उत्पादों/टेक्नोलॉजी के लाइसेंस और व्यावसायीकरण से अनभिज्ञ हैं। यह विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ा वित्तीय हानि है। निजी कंपनियाँ इन किस्मों/टेक्नोलॉजी को अपनाकर योजनाओं से धन कमा रही हैं।
7. विश्वविद्यालय के पास दीर्घकालिक, और अल्पकालिक के बारे में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है; उन्हें इस पहलू पर कार्य करने की आवश्यकता है।
8. शोध की प्रकाशन की गुणवत्ता बहुत निम्न स्तर की है। अधिकांश प्रकाशन निम्न गुणवत्ता वाली पत्रिकाएँ हैं।
9. पिछले पाँच वर्षों में अनाज/दलहन/तिलहन में कुछ ही किस्में जारी या अधिसूचित की गई हैं, लेकिन बागवानी और सब्जियों की एक भी किस्म जारी या अधिसूचित नहीं की गई।
10. पुरानी और महत्वपूर्ण किस्मों के संरक्षण में कोई संतोषजनक कार्य नहीं किया गया। आगे की प्रक्रिया के लिए उनके पास न तो न्यूक्लियस बीज हैं और न ही प्रजनक बीज।

उपकार टीम के सुझाव/अनुशंसाएँ:

1. विश्वविद्यालय में अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने से समग्र शोध परिणामों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
2. नए और युवा प्राध्यापकों को अच्छे प्रस्ताव लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें वैज्ञानिक लेखन या प्रस्ताव लेखन पर कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

3. पेटेंट दाखिल और उसके लाइसेंसिंग/व्यावसायीकरण के लिए उचित प्रशिक्षण होना चाहिए; इससे उन्हें उत्पाद/टेक्नोलॉजी को किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।
4. छात्रों और प्राध्यापकों में उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने के लिए पहल की जानी चाहिए।
5. परियोजना के अंतर्गत यंग प्रोफेशनल (YP-I/YP-II) की नियुक्ति परियोजना के अंत तक या उनके प्रदर्शन के आधार पर होनी चाहिए, न कि केवल छह महीने के लिए। केवल छह महीने के लिए परियोजना कर्मचारियों की नियुक्ति अनिवार्य रूप से परियोजना संचालन में बाधा आती है। विश्वविद्यालय में यंग प्रोफेशनल/जे.आर.एफ/एस.आर.एफ की बार-बार नियुक्ति में भी काफी समय लगता है, जिससे परियोजना प्रमुख के लिए परियोजना को सुचारू रूप से चलाना मुश्किल हो जाता है।
5. विश्वविद्यालय को एक व्यापक मूल्यांकन ढाँचे को अपनाने पर विचार करना चाहिए जो शोध योगदान की गुणवत्ता, गहराई और सामाजिक प्रभाव को पहचानते हों, और एक ऐसी शोध संस्कृति को बढ़ावा दें जो केवल प्रकाशन संख्या तक ही सीमित न हो।
6. शोध पारिस्थितिकी प्रणाली में सतत योगदान को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के लिए शोध-उन्मुख भत्ते शुरू किए गए हैं। ये प्रोत्साहन सामूहिक रूप से एक सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं, जो शिक्षकों को अपने शोध प्रयासों को प्राथमिकता देने और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।
7. शैक्षणिक उत्कृष्टता, अंतर-सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने और वैश्विक शोध परिदृश्य को समृद्ध बनाने के लिए शोध में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
8. शिक्षकों और छात्रों के लिए संरचनात्मक प्रतिपुष्टि पद्धति और अनुशंधान केंद्रों और विभागों की समय-समय पर समीक्षा करना।
9. शोध परिदृश्य को सुदृढ़ करने के लिए, एक व्यापक दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना आवश्यक है जो तात्कालिक चुनौतियों से परे हो, जिसमें रणनीतिक योजना और विकास शामिल हो।
10. प्रत्येक विश्वविद्यालय को आवश्यकता-आधारित शोध के लिए प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करना, विशिष्ट विशेषज्ञता को बढ़ावा देने और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है।
11. शोध के लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति, सोशल मीडिया अभियान और इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म जैसे विविध माध्यमों का उपयोग करना।

12. समिति ने चमत्कारी किस्मों सरजू 52, नरेंद्र 2 और मस्टर्ड 8501 को पुनः अधिसूचित करने की संस्तुति की, क्योंकि ये अभी भी प्रमुख या उच्च उपज देने वाली किस्में हैं।
13. विश्वविद्यालय को AICRP द्वारा अधिसूचित दो मक्का लाइनों पर काम करना चाहिए और पिछले 10 वर्षों में इन प्रजनन लाइनों की स्थिति की जांच करनी चाहिए।
14. उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त के अनुसार, उपकार को निर्देश दिया गया कि उपकार प्रत्येक छह महीने में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की समीक्षा और निगरानी करेगा।



आचार्य देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के पदाधिकारियों के साथ
उपकार टीम के सदस्यों की चर्चा



प्रायोगिक क्षेत्र भ्रमण के दौरान उपकार टीम के सदस्य



मछली पालन एवं मखाने की खेती की जानकारी लेते उपकार टीम के सदस्य

कृषि शिक्षा और गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता



कृषि विश्वविद्यालय में बैठक में मौजूद अतिथि व अन्य। -कृषि विश्वविद्यालय

संवाद न्यूज एजेंसी

कुमारगंज। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय समीक्षा बैठक हुई। बैठक में कृषि विवि में विगत तीन वर्षों के कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के महानिदेशक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता पूर्ण शोध समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उपकार कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए कटिबद्ध है। उन्होंने

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय समीक्षा बैठक

छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने की वकालत करते हुए विश्व स्तरीय शोध करने पर बल दिया।

समीक्षा बैठक में सुझाव देते हुए प्रो. परमेश्वर सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे नुकसान को कम करने की दिशा में हम सबको मिलकर काम करना होगा। इस अवसर पर डॉ. सुशील कुमार, डॉ. राम बटुक सिंह, डॉ. धीरेन्द्र कुमार सिंह मौजूद रहे।

विश्वस्तरीय कृषि शिक्षा, गुणवत्ता युक्त शोध समय की मांग: डा. संजय

जासं • कुमारगंज (अयोध्या): आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में समीक्षा बैठक हुई। गत तीन वर्षों की कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के कार्यों की समीक्षा की गई। अध्यक्षता उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. संजय सिंह ने की। विज्ञानी मखाना परिक्षेत्र का निरीक्षण करने भी गए।

महानिदेशक डा. सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद कृषि विवि में भी इसे लागू करने की प्राथमिकता होनी चाहिए। बताया कि उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) प्रदेश में कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके लिए सरकार गुणवत्तापूर्ण शोध करा रही है। कई परियोजनाएं संचालित हो रही हैं। इससे किसानों के जीवन स्तर को उठाया जा सकेगा। उन्होंने छात्रों में उद्यमिता को बढ़ावा दिए जाने पर बल दिया। सुझाव देते हुए उपकार के कृषि शिक्षा एवं तकनीकी हस्तान्तरण के उप निदेशक प्रो. परमेश्वर सिंह ने कहा कि आज मौसम परिवर्तन की चुनौती से हो रहे कृषि एवं किसानों के नुकसान को कम करने की दिशा में कार्य करना होगा। इस अवसर पर उपकार के शोध के उप निदेशक डा. राजर्षि कुमार गौड़ ने कहा कि मछली पालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन के साथ ही विभिन्न फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता पूर्ण बीज के उत्पादन की